

# उतरन

वाजिदा तबस्सुम

“निकको अल्ला, मेरे को बेहोत शरम लगती है।”

“ऐओ, इसमें शरम की क्या बात है? मैं नई उतारी क्या अपने कपड़े?”

“ऊं...।” चमकी शरमाई!

“अब उतारती है कि बोलूं अन्ना बी को?” शहज़ादी पाशा, जिसकी रग-रग में हुक्म चलाने की आदत रमी हुई थी, चिल्ला कर बोली। चमकी ने कुछ डरते-डरते, कुछ शरमाते-शरमाते अपने छोटे-छोटे हाथों से पहले तो अपना कुरता उतारा, फिर पायजामा ...फिर शहज़ादी पाशा के हुक्म पर झाग-भरे टब में उसके साथ कूद पड़ी।

दोनों नहा चुकीं तो शहज़ादी पाशा ऐसी मुहब्बत से, जिसमें अभिमान और स्वामित्व की गहरी छाप थी, मुस्कुरा कर बोली, “होर तू यह बता कि अब तू कपड़े कौन से पेन रई?” “कपड़े?” शहज़ादी पाशा हैरानी से चिल्ला कर नाक सिकोड़ते हुए बोली, “इत्ते गंदे, बदबू वाले? फिर पानी से नहाने का फायदा?”

चमकी ने जवाब देने के बजाय उलटा एक सवाल जड़ दिया, “होर आप क्या पेन रहे, पाशा?” “मैं?” शहज़ादी पाशा बड़े संतोष और गर्व से बोली, “वह मेरी बिस्मिल्लाह के वक्त चमक-चमक का जोड़ा मेरी दादी मां बनाए थे, वोइच, मगर तूने काये को पूछी?”

चमकी क्षण भर के लिए सोच में पड़ गई। फिर हंस कर बोली, “मैं सोच रई थी...।” शहज़ादी पाशा ने आश्चर्यचकित होकर पूछा, “क्या?” कि एकदम उधर से अन्ना बी की तेज़ चिंघाड़ सुनाई दी, “हो पाशा! ये मेरे

को हमाम में से भगाए को तुम इस उजाड़-मारी चोटी के साथ क्या बातें मारने ले बैठीं...? जलदी निकलो, नई तो बी पाशा को अब्बी जी को बोलतोऊं।” अपनी सोची हुई बात चमकी ने जल्दी से कह सुनाई, “पाशा, मैं सोच रही थी कि कब्बी आप होर मैं ‘ओढ़नी बदल’ बहनां बन गए तो आप के कपड़े मैं भी पेन ले सकती ना?”

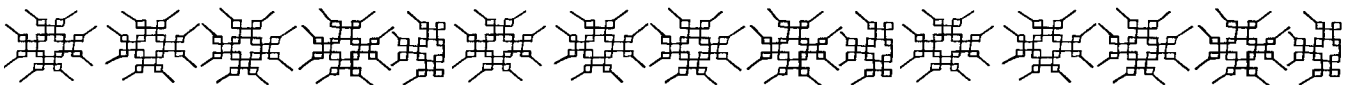
“मेरे कपड़े? तेरा मतलब है कि वो सारे कपड़े जो मेरे संदूकां भर-भर को रखे पड़े हैं!”

उत्तर में चमकी ने ज़रा डर कर सिर हिलाया। शहज़ादी पाशा हंसते-हंसते दोहरी हो गई। “ऐओ, कितनी बेवकूफ़ छोकरी है। आगे तू तो नौकरानी है, तू तो मेरी उतरन पहनती है। होर उम्र भर उतरन ही पहनेगी।”

फिर शहज़ादी पाशा ने अपार-प्यार से, जिस में अभिमान और गर्व अधिक, निष्कपटता कम थी, अपना अभी-अभी का नहाने के लिए उतारा जोड़ा चमकी की ओर उछाल दिया, “ये ले, यह उतरन पेन ले। मेरे पास तो बेहोत कपड़े हैं।”

चमकी को क्रोध आ गया, “मैं काय को पहनूं, आप पेनो न मेरा जोड़ा।” उसने अपने मैले जोड़े की ओर इशारा किया। शहज़ादी पाशा गुस्से से हुंकारी, “अन्ना बी...!”

अन्ना बी ने ज़ोर से दरवाज़े को भड़भड़ाया और दरवाज़ा, जो सिर्फ हल्का सा भिड़ा हुआ था, पाटों-पाट खुल गया, “अच्छा, तो आप दोनों साहिबान अभी तक नंगेइच



खड़े वे हैं...!" अन्ना बी नाक पर उंगली रख कर बनावटी गुस्से से बोलीं।

शहज़ादी पाशा ने झट स्टैंड पर टंगा हुआ नरम-नरम गुलाबी तौलिया उठा कर, अपने जिस्म के गिर्द लपेट दिया। चमकी यूँ ही खड़ी रही। अन्ना बी ने अपनी बेटी की ओर ज़रा गुस्से से देखा, "होर तू पाशा लोगों के हमाम में काये कू पानी नहाने को आन तुरी?"

"ये इन्नो शहज़ादी पाशा ने बोले कि तू भी मेरे साथ पानी नहा।"

अन्ना बी ने डरते-डरते इधर-उधर देखा कि कोई देख न रहा हो। फिर जल्दी से उसे हमाम से बाहर खींच कर बोलीं, "जल्दी से जा, नौकरखाने में... नई तो सर्दी-वर्दी लग गई तो मरेगी। पेन मेरे कपड़े..." वह शरम से ज़रा सिमटी।

"अब ये चिक्कट गोंद कपड़े निक्को पेन। वह लाल पेटी में शहज़ादी पाशा परसों अपना कुरता-पायजामा दिए थे, वह जाकर पेन ले।"

वहीं खड़ी-खड़ी वह सात वर्ष की नन्ही सी जान बड़ी गहरी सोच के साथ रुक-रुक कर बोली, "अम्मनी, जब मैं होर शहज़ादी पाशा एक बराबर के हैं तो उन्नों मेरे उतरन क्यों नई पेने?"

"ठहर ज़रा, मैं मम्मा को जाकर बोलतीऊं कि चमकी मेरे को ऐसा बोली...।"

लेकिन अन्ना बी ने डर कर उसे गोद में उठा लिया। "आगे पाशा उन्ने तो छिनाल पागल होली गई है। ऐसे दीवानी को बातां काये को अपने मम्मा से बोलते आप? उसके संगीत खेलना, न बात करना। चुप उसके नाम पर जूती मार देओ आप।"

शहज़ादी पाशा को कपड़े पहना कर, कंधी-चोटी करके, खाना-वाना खिला कर, जब सारे कामों से निश्चित होकर, अन्ना बी अपने कमरे में पहुंची तो देखा कि चमकी अभी तक नंगा झाड़ बनी खड़ी है। आव देखा न ताव, उन्होंने अपनी बेटी को धुनकना शुरू कर दिया।

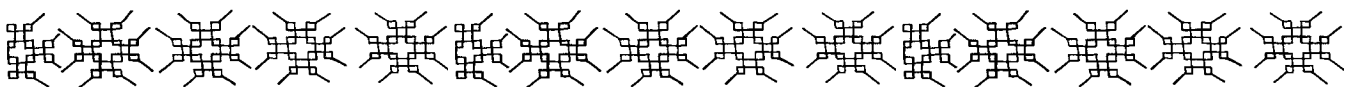
"जिसका खाती, उसी से लड़ाइयां मोल लेती! छिनाल घोड़ी! अबी-कबी बड़े सरकार निकाल बाहर कर दिए तो किधरे जाएंगे? इत्ते नखरे!"

अन्ना बी के हिसाब से तो यह बड़े भाग्य की बात थी कि वह शहज़ादी पाशा को दूध पिलाने के लिए रखी गई थी। उनके खाने-पीने का स्तर तो बेशक वही था, जो बेगमों का था कि भई वह नवाब साहिब की इकलौती बच्ची को दूध पिलाती थी। कपड़ा-लत्ता भी बेहिसाब था, कि दूध पिलाने वाली के लिए साफ़-सुथरा रहना अनिवार्य था। और सब से ज़्यादा मज़े तो ये थे कि उनकी अपनी बच्ची को, शहज़ादी पाशा की बेहिसाब उतरन मिलती थी। कपड़े-लत्ते मिलने की बात तो तय थी! हद यह कि अकसर चांदी के गहने और खिलौने तक भी उतरन में दिए जाते थे। इधर वह थी कि जब से ज़रा-ज़रा होश संभाल रही थी, बस यही ज़िद किए जाती थी कि मैं बी पाशा की उतरन क्यों पहनूं? कभी-कभार तो आईना देख कर बड़ी सूझ-बूझ के साथ कहती, "अम्मनी, मैं तो बी पाशा से भी अधिक सुंदर हूँ ना! फिर तू उन्हें मेरी उतरन पेना ना?"

अन्ना बी हर घड़ी टोकती थी, "बड़े लोग तो बड़े लोग ही ठहरे। अगर किसी ने सुन-गुन पा ली कि मुई अन्ना, ना असल की बेटी ऐसे-ऐसे बोल बोलती है, तो नाक-चोटी काट कर बाहर न कर देंगे?" वैसे भी दूध पिलाने का ज़माना तो अरसा हुआ, बीत गया था। वह तो ड्योढ़ी की परंपरा कहिए, कि अन्ना लोगों की मरे बाद ही छुट्टी की जाती थी। लेकिन दोष भी क्षमा किए जाने योग्य हो, तो ही क्षमा मिलती है। ऐसा भी क्या? अन्ना बी ने चमकी के कान मरोड़ कर उसे समझाया, "आगे से कुछ बोली तो याद रख! तेरे कू उमर भर बी पाशा की उतरन पहनना है। समझी कि नई गधे की औल्याद!"

गधे की औलाद ने उस समय जुबान तो सी ली, लेकिन मन में लावा पकता ही रहा।

तेरह साल की हुई तो शहज़ादी पाशा की, पहली बार नमाज़े कज़ा हुई। आठवें दिन गुलपाशी हुई तो ऐसा ज़री वाला झिलमिलाता जोड़ा मम्मा ने सिलवाया कि आंख ठहरती नहीं थी। जगह-जगह सोने के घुंघुराओं की जोड़ियां टंकवाईं कि जब भी पाशा चलती तो 'छन-बन'



पाज़ेबें सी बजतीं। ड्योढ़ी की प्रथा के अनुसार वह बेहद बढ़िया कीमती जोड़ा भी उतरन में दे दिया गया। अन्ना बी खुशी-खुशी वे सौगातें लेकर पहुंची, तो चमकी जो अपनी आयु से कहीं अधिक समझदार और स्वाभिमानी हो चुकी थी, दुख से बोली, “अम्मनी, मजबूरी नाते से लेना होर बात है, लेकिन आप ऐसी चीज़ां ले कर खुश मत हुआ करो।”

“अगगे बेटा!” वह फुसफुसा कर बोली, “यह जोड़ा अगर बिकाने को भी बैठे, तो दो सौ रुपये तो कहीं नई गए। अपन लोगां नसीबे वाले हैं कि ऐसी ड्योढ़ी में पड़े।”

“अम्मनी,” चमकी ने बड़ी हसरत से कहा, “मेरा जी बोलता कि मैं भी कभी बी पाशा को उतरन दूं?”

अन्ना बी ने सिर पीट लिया। “अगगे, तू भी जवान हो गई है। ज़रा अखल पकड़। ऐसा-वैसी बातां कोई सुन लिया, तो मैं क्या करूंगी? मां, ज़रा मेरे बुढ़े जूड़े पर रहम कर।”

चमकी मां को रोता देख कर खामोश रह गई।

मौलवी साहब ने दोनों को साथ ही साथ कुरान शरीफ़ और उर्दू कायदा शुरू कराया था। बी पाशा ने कम और चमकी ने अधिक तेज़ी दिखाई। दोनों ने जब पहली बार कुरान का पाठ खत्म किया गया था तो बड़ी पाशा ने उपकार के तौर पर, चमकी को भी एक हल्के कपड़े का नया जोड़ा सिलवा दिया था। चाहे बाद में उसे बी पाशा का भारी जोड़ा भी उतरन में मिल गया था, लेकिन उसे अपने उसे अपना वह जोड़ा जान से भी ज़्यादा प्यारा था। इस जोड़े से उसे किसी प्रकार के अपमान का अनुभव नहीं होता था। हल्के ज़ाफ़रानी रंग का जोड़ा... जो कितने ही सारे जगमगाते, चमचम करते जोड़ों से बढ़ कर था।

अब जब कि शहज़ादी पाशा ज़रूरत भर पढ़-लिख भी चुकी थीं, जवान भी हो चुकी थीं, उनका घर बसाने की चिंता की जा रही थी। ड्योढ़ी सुनारों, दरज़ियों, व्यापारियों का ठिकाना बन चुकी थी। चमकी यही सोचे जाती कि वह तो शादी के इतने बड़े हंगामे के दिन

भी अपना वही जोड़ा पहनेगी जो किसी की उतरन नहीं था।

बड़ी पाशा जो बड़ी दयालु औरत थीं, हमेशा अपने नौकरों का अपनी औलाद ही की तरह ध्यान रखती थीं। इसलिए शहज़ादी पाशा के साथ वह चमकी के विवाह के लिए भी उतनी ही चिंतातुर थीं। आखिर नवाब साहिब से कह-सुन कर उन्होंने एक योग्य लड़का चमकी के लिए तलाश कर ही लिया। सोचा कि शहज़ादी पाशा की शादी के बाद इसी झोड़-झुमके में चमकी का भी निकाह पढ़ दिया जाए।

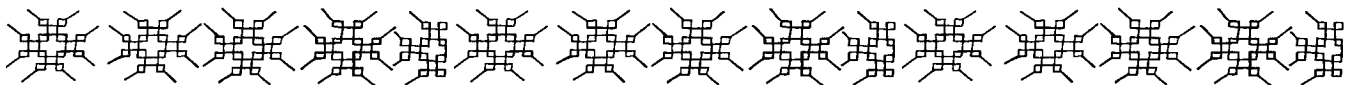
उस दिन जब शहज़ादी पाशा के निकाह को केवल एक दिन रह गया था और ड्योढ़ी मेहमानों से ठसाठस भरी पड़ी थी और लड़कियों का टिड्डी दल सारी ड्योढ़ी को सिर पर उठाए हुए था, अपनी सखियों के झुरमुट में बैठी हुई शहज़ादी पाशा, पैरों में मेहंदी लगवाए चमकी से कहने लगी, “तू ससुराल जाएगी तो तेरे पैरों में मेहंदी लगाऊंगी।”

“ऐओ, खुदा न करे?” अन्ना बी ने प्यार से कहा, “इसके पांव आप के दुश्मनां छूएं। आप ऐसा बोले, सो बस है। बस इतनी दुआ करना पाशा कि आप के दूल्हा मियां जैसा शरीफ़ दूल्हा इसका निकल जाए।”

“मगर इसकी शादी कब हो रई जी...?” कोई चंचल लड़की पूछ बैठी।

शहज़ादी पाशा वही बचपन वाली अभिमान-भरी हंसी हंस कर बोली, “मेरी इत्ती सारी उतरन निकलेगी, तो इसका दहेज तैयार समझो।”

उतरन... उतरन... उतरन... कई हज़ार सुईयों की बारीक-बारीक नोकें जैसे उसके दिल को बंध गईं। वह आंसू पीते हुए अपने कमरे में चुपचाप पड़ गई। संध्या होते ही लड़कियों ने फिर ढोलक संभाली। एक से एक वाहियात गाना गाया जा रहा था। पिछली रात रत-जगा हुआ था। आज फिर होने वाला है। परली तरफ़ सहन में ढेरों चूल्हे जलाए बावर्ची लोग भांति-भांति के पकवान तैयार करने में व्यस्त थे। ड्योढ़ी पर रात ही से दिन का गुमान हो रहा था।



चमकी की रोती हुई सुंदरता संतरी जोड़े में और भी खिल उठी। यह जोड़ा है जो उसे हीन-भावना के पाताल से उठा कर आकाश में ऊंचाइयों पर बिठा देता था। यह जोड़ा किसी की उतरन नहीं था। नये कपड़ों से सिला हुआ यह नया जोड़ा, जो उसे जीवन भर में बस एक ही बार नसीब हुआ था। वरना सारा उमर तो शहज़ादी पाशा की उतरन पहनते ही गुज़ारी थी। और चूँकि दहेज भी सारे का सारा उनकी उतरन का ही बना था, इसलिए शेष जीवन भी उसे उतरन इस्तेमाल करनी होगी। 'लेकिन बी पाशा, एक सैयदज़ादी और कहां तक पहुंच सकती है, यह तुम भी देख लेना। तुम एक से एक पुरानी चीज़ मुझे इस्तेमाल करने को दिए न! अब तुम देखना...' मलीदे का थाल उठाए वह दूल्हा वालों की कोठी में प्रविष्ट हुई। हर तरफ़ दीपमाला हो रही थी। यहां भी वही चहल-पहल थी, जो दुल्हन वालों के महल में थी। सुबह निकाह जो पढ़ा जाना था।

इतने बड़े हंगामे और इतनी बड़ी कोठी में, किसी ने उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। पूछती-पूछती वह सीधी दूल्हा मियां के कमरे में जा पहुंची। हल्दी-मेहंदी की रीतों-रस्मों से थके-थकाए दूल्हा मियां अपनी मसहरी पर लेटे हुए थे। परदा हिला, तो वह मुड़े और देखते के देखते रह गए।

घुटनों तक लंबा जाफ़रानी कुरता, कसी-कसी पिंडलियों पर मढ़ा हुआ तंग पायजामा, हल्की-हल्की कामदानी का कढ़ा हुआ जाफ़रानी दुपट्टा। रोई-रोई, भीगी-भीगी गुलाबी आंखें, छोटी आस्तीनों वाले कुरते में से झांकती कोमल-कोमल गदराई बांहे, बालों में मोतिये के गजरे पियोए हुए, होठों पर एक कातिल सी मुस्कान! यह सब नया नहीं था, लेकिन एक पुरुष जिसकी पिछली कई रातें किसी स्त्री की कल्पना में बीती हों, शादी से एक रात पहले बहुत खतरनाक हो जाता है, चाहे वह कैसा ही शरीफ़ हो।

रात, जो गुनाह का निमंत्रण होती है।

तन्हाई, जो गुनाहों की हिम्मत बढ़ाती है। चमकी ने उन्हें

यूं देखा कि वह जगह-जगह से टूट गए। चमकी जान-बूझ कर मुंह मोड़ कर खड़ी हो गई। वह तिलमिलाए से अपनी जगह से उठे और ठीक उसी के सामने खड़े हो गए। आंखों के कोनों से चमकी ने उन्हें यूं देखा कि वह ढेर हो गए।

“तुम्हारा नाम?” उन्होंने थूक निगल कर कहा।

“चमकी!” और एक चमकीली हंसी ने उसके प्यारे-प्यारे चेहरे को चांद कर दिया।

“सचमुच तुम में जो चमक है, उसका तकाज़ा यही था कि तुम्हारा नाम चमकी होता।” उन्होंने डरते-डरते अपना हाथ उसके कंधों पर रख दिया। खालिस मरदाने लहज़े में नहीं जो किसी लड़की को पटाने से पहले ख्वाहमखाह इधर-उधर की हांकते हैं, बल्कि कांपते हुए हाथ कंधे से हटा कर उसके हाथ को पकड़ते हुए बोले, “यह थाल में क्या है?”

चमकी ने जानबूझ कर उनकी हिम्मत बढ़ाई, “आप के वास्ते मलीदा लाई हूं। रत-जगा था ना, रात को।” और उसने बिना तलवार के उन्हें घायल कर दिया। “मुंह मीठा करने को।” वह मुस्कुराई।

“हम मलीदे-वलीदे से मुंह मीठा करने के कायल नहीं हैं। हम तो... हां...।” और उन्होंने होठों के शहद से मुंह मीठा करने को होठ बढ़ा दिए और चमकी उनकी बांहों में ढेर हो गई। उनकी पवित्रता लूटने... स्वयं लुटने... उन्हें लूटने के लिए।

विदा के दूसरे दिन ड्योढ़ी की प्रथा के अनुसार जब शहज़ादी पाशा अपनी उतरन, अपना सुहाग का जोड़ा अपनी अन्ना, अपनी खिलाई की बिटिया को देने गई, तो चमकी ने मुस्कुरा कर कहा, “पाशा, मैं ज़िंदगी भर आपकी उतरन इस्तेमाल करती आई, मगर अब आप भी...!” और पागलों की तरह हंसने लगी, “मेरी इस्तेमाल कर ली चीज़ अब ज़िंदगी भर आप भी...।” उसकी हंसी रुकती ही नहीं थी।

सब लोग यही समझे कि बचपन से साथ खेली सखी की जुदाई के गम ने, कुछ देर के लिए चमकी को पागल कर दिया है!

